Merits and Demerits of Proportional and Progressive tax

आनुपातिक करों के दोष तथा प्रगतिशील करों के गुण निम्नलिखित है —

(1) आनुपातिक कर प्रणाली सामाजिक न्याय के विरुद्ध है। आनुपातिक करों के क्रियान्वयन में गरीब और अमीर के बीच अन्तर नहीं किया जाता है। समाज के हर वर्ग पर लगनेवाले करों का दर समान होता है। अतः यह सामाजिक न्याय के विरुद्ध है।

किन्तु प्रगतिशील कर न्यायोचित है क्योंकि कर का भार उच्च आय वाले वर्गों पर अधिक पड़ता है।

(2) आनुपातिक करों में लोचता के गुणों का अभाव रहता है। आवश्यकता पड़ने पर सरकार इस कर के द्वारा अधिक आय प्राप्त नहीं कर सकती क्योंकि विभिन्न वर्गों के आय में वृद्धि होने पर आनुपातिक करों से प्राप्त आयों में वृद्धि नहीं हो सकती है।

किन्तु प्रगतिशील कर में लोचता एवं उत्पादकता दोनों के गुण पाये जाते है। आवश्यकता पड़ने पर धनी वर्गों पर कर की दरों को बढ़ाकर सरकार अपनी आय को बढ़ा सकती है।

(3) आनुपातिक कर प्रणाली में करों से प्राप्त

Scanned with OKEN Scanner

आय कम रहती है किन्तु प्रशासन द्वारा वसूला जाता कर लागत अपेक्षाकृत अधिक रहता है। इसलिए इस प्रणाली में मितव्ययिता का अभाव रहता है।

किन्तु प्रगतिशील कर अधिक मितव्ययी होता है, क्योंकि जब प्रगतिशील कर की दर बढ़ता है तो करों का collection करने का व्यय नहीं बढ़ता।

(4) आनुपातिक कर करदान योग्यता पर आधारित नहीं है क्योंकि धनी एवं गरीब वर्ग पर समान कर की दर रहती है इसलिए आनुपातिक कर न्यायोचित नहीं है।

किन्तु प्रगतिशील कर करदान योग्यता पर आधारित है इसलिए यह न्यायोचित है।

(5) समाज के आय एवं धन में वृद्धि होने से उससे तेजी से उत्पादन एवं उपभोग बढ़ता है जिससे कर की दर बढ़ती है। लेकिन आनुपातिक कर प्रणाली में ये बात संभव नहीं है।

प्रगतिशील कर प्रणाली में बढ़ती हुई आय के साथ प्रगतिशील कर की दर बढ़ती है।

(6) आनुपातिक कर प्रणाली में सामाजिक नैतिकता का अभाव रहता है। क्योंकि गरीबों और अमीरों

में कर की दर समान रहते है लेकिन दोनों के भाग में अन्तर होता है।

प्रगतिशील कर प्रणाली सामाजिक नैतिकता बनाये रखती है। क्योंकि यह ऊँची कर की दर धनी वर्ग पर तथा कम कर की दर गरीब वर्ग पर लगाने की व्यवस्था करती है।

(7) आनुपातिक कर प्रणाली के द्वारा Funtional Finance का महत्व कम हो जाता है।

किन्तु प्रगतिशील कर प्रणाली Functional Finance का महत्वपूर्ण अंग बन गया है। मुद्रा स्फीति के समय जनता के अत्याधिक क्रयशक्ति को इस कर के द्वारा घटाया जा सकता है।

आनुपातिक कर प्रणाली के ~~दोष~~ गुण एंव प्रगतिशील कर प्रणाली के दोष निम्नलिखित है-

(1) आनुपातिक कर प्रणाली में आय के वितरण में कोई परिवर्तन नहीं होता तथा विभिन्न करदाताओं की सापेक्षिक स्थिति पूर्ववत बनी रहती है।

किन्तु प्रगतिशील कर प्रणाली के द्वारा करदाताओ के सापेक्षिक स्थिति मे परिवर्तन हो जाता है।

(2) आनुपातिक कर प्रणाली सरल होती है तथा सभी प्रकार के आयों पर समान रूप से लागू होती है किन्तु प्रगतिशील कर प्रणाली में अधिकाधिक रूप से आय के विभिन्न वर्गों पर कर tax लगाया जाता है जिसके फलस्वरूप प्रगतिशील करों की सरलता नष्ट हो जाती है

(3) कर की मात्रा में अनुचित मात्रा में वृद्धि पर रोक आनुपातिक कर प्रणाली के अन्तर्गत रह ही सकता है। क्योंकि सरकार मनमाने ढंग से करो की मात्रा में अनुचित वृद्धि नहीं कर सकती है। चूंकि कर की दरे सभी प्रकार की आय के लिए समान होती है लेकिन प्रगतिशील कर को सरकार बढ़ा सकती है क्योंकि वह धनी पर अधिक और गरीबों पर कम लगाया जाता है

(4) आनुपातिक कर से कार्य करने तथा बचत करने की इच्छा का प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। किन्तु प्रगतिशील प्रणाली के अन्तर्गत करों की दर इतनी ऊंची होती है जिससे कार्य करने तथा बचत करने की इच्छा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(5) आनुपातिक कर समान त्याग के सिद्धान्त पर आधारित है इसलिए इसकी औचित्यता अधिक है। समाज के विभिन्न वर्गों के लिए कर का दर समान होता है किन्तु प्रगतिशील प्रणाली में समाज के विभिन्न आयवाले वर्गों के लिए भिन्न भिन्न कर की दरें होती है।

———x———

Dr Sandhya Rani

Scanned with OKEN Scanner